साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन

मंगलवार, 16 फ़रवरी 2016

साहित्योत्सव का आरंभ : अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

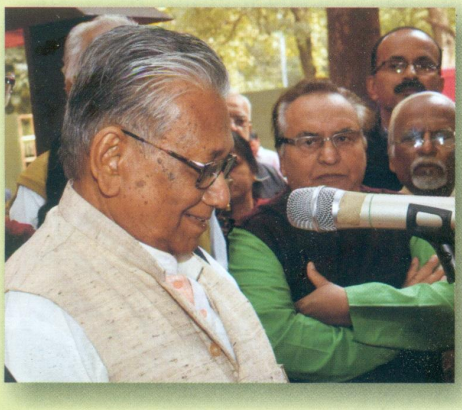

नई दिल्ली 15 फ़रवरी 2016। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले साहित्योत्सव की शुरूआत आज अकादेमी प्रर्दशनी के उदघाट्न से हुई। प्रदर्शनी में अकादेमी की 2015 की गतिविधियों की चित्रमय प्रस्तुति के साथ-साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया लेखक मनोज दास द्वारा किया गया। रवीन्द्र भवन लॉन में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों का स्वाभिमान है और लेखकों ने इसके मान की हमेशा रक्षा की है। उन्होने अकादेमी द्वारा गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा इस बात पर जोर दिया कि उन भाषाओं में लिखा जा रहा श्रेष्ठ साहित्य दूसरी भाषाओं के पाठक समुदाय तक पहुँचाए जाने कि ज़रूरत है। उन्होंने अकादेमी से अपने 55 वर्ष लंबे संबंधों का जिक्र किया तथा 1957 का अकादेमी और उसके अध्यक्ष पंडित जवाहर लाल नेहरू से जुड़ा हुआ एक रोचक संस्मरण सुनाया और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के विकास में अकादेमी की भूमिका को रेखांकित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में प्रकाशन और पुरस्कार का जो विस्तृत कार्य कर रही है उसकी जानकारी ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे यही इस साहित्योत्सव का उद्देश्य है। उन्होने देश भर में अकादेमी द्वारा व्यापक पैमाने पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन योजना के सफलता के लिए अकादेमी के अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई दि तथा अकादेमी को प्राप्त साहित्य संसार के सहयोग एवं समर्थन के लिए लेखकों के प्रति आभार प्रकट किया। इससे पहले अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की 2015 की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने जानकारी दी कि साहित्य अकादेमी ने पिछले साल 479 कार्यक्रम आयोजित किए तथा 189 पुस्तक प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। अकादेमी के इम्फाल और नई दिल्ली में जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केन्द्रों की भी शुरुआत की गई। इस वर्ष अकादेमी ने 426 पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा 117 पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसके अलावा 9 विद्वानों को भाषा सम्मान तथा प्रख्यात लेखकों एस. एल. भैरप्पा एवं सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता और चीन के हिन्दी विद्वान जियाङ दिङहान को प्रदान किया गया। उन्होने बताया कि अकादेमी द्वारा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक विक्री केन्द्र खोले गए हैं। हर 18 घंटे में एक कार्यक्रम और हर 20 घंटे में एक किताब का प्रकाशन किया है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि इस वर्ष साहित्योत्सव में आदिवासी एवं वाचिक साहित्य एवं पूर्वोत्तर पर विशेष फोकस किया जा रहा है।

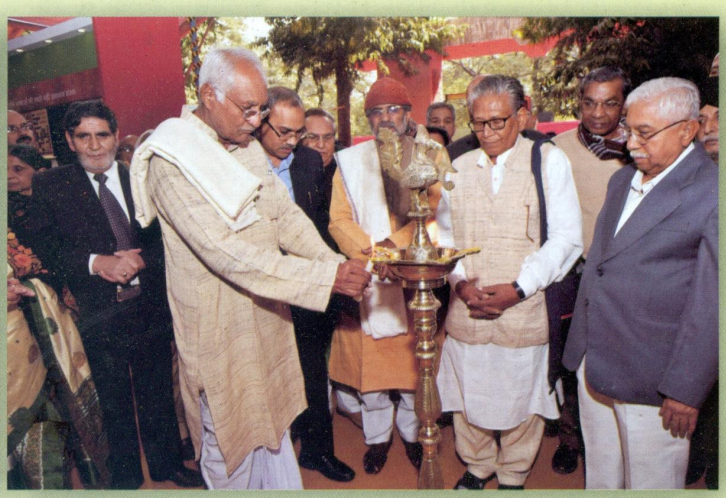

आज के कार्यक्रम

मीडिया से संवाद :
पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह :
सायं 5.30 बजे, फ़िक्की सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम :
'रासलीला' और 'पुंग चोलम' की प्रस्तुति,

आदिवासी भाषा के कवियों ने किया रचनापाठ

आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन 15 फरवरी 2016 को अपराह्न 2.00 बजे रवींद्र भवन लॉन के सभागार में किया गया। अतिथियों का स्वागत अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने बताया कि अकादेमी ने साहित्योत्सव में आदिवासी भाषाओं के साहित्य को विशेष सम्मान देने के लिए आदिवासी भाषा काव्योत्सव का आयोजन किया है। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि दूसरे देशों की तुलना में, भारत में वाचिक और आदिवासीय परंपराओं की बहुतायात है। भाषिक दृष्टि से भारत जितना समृद्ध कोई और देश नहीं है। काव्योत्सव का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् मृणाल मिरी ने किया। मृणाल मिरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रत्येक भाषा अपने आप में विशिष्ट, सम्पूर्ण और स्वायत्त होती है लेकिन साथ ही भाषाओं की अपनी सीमा भी है। चूँकि भाषाओं की शब्दावली और अभिव्यक्ति जीवन और परिवेश द्वारा निर्धारित होती है इसलिए एक भाषा की अभिव्यक्ति का अनुवाद दूसरी भाषा में किया जाना प्रायः संभव नहीं हो पाता।

काव्योत्सव की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष प्रख्यात कवि एवं समालोचक प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि हम भाषा में बोलते ही नहीं, सोचते भी हैं। यह हमारी चिंतन प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। भाषा चिंतन पर संस्कृत विद्वानों के योगदान को उन्होंने विशेष रूप से रेखांकित किया। इस अवसर पर अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारत में 400 से अधिक जनजातीय भाषाएँ हैं, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि जनजातीय समुदायों को जैसे-जैसे हम मुख्यधारा में जोड़ रहे हैं वैसे-वैसे उनकी विशिष्टता और पहचान भी लुप्त होती जा रही है। उन्होंने अकादेमी द्वारा आयोजित इस काव्योत्सव को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इस तरह की राष्ट्रीय आयोजनों से आदिवासीय एवं लोक साहित्य को मज़बूती मिलेगी। काव्योत्सव के अंतर्गत देश के 16 राज्यों की आदिवासी भाषाओं के प्रतिनिधि कवि सम्मिलित हुए। उन्होंने अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी या अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताओं का पाठ किया।

इस काव्योत्सव में शांता नायक (बंजारा), मानसिंह चौधरी (भीली), जोगमाया चकमा (चकमा), जितेंद्र वसावा (देहवाली), इनाम गमांग (सौरा), शिवकुमार पांडेय (हल्बी), रवींद्रनाथ कालुंदिया (हो), दैवोर्मि नोङ्पोह (वार जयंतिया), स्ट्रीमलेट डखार (खासी), शेफाली देबबंग (कोकबॅराक), आनंद माड़ी (कोया), अन्ना माधुरी तिर्की (कुडुक), अनुज मोहन प्रधान (कुइ), क्रैरी मोग चौधरी (मोग) तथा उर्मिला कुमरे (गोंडी) ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

भीली कवि मानसिंह चौधरी ने आदिवासी समुदाय की मुख्यधारा में सहभागिता और आदिम मानवीय अस्मिता को प्रस्तावित करते हुए पंक्तियाँ पढ़ीं -- *आख़िर कौन हैं हम? / हम हैं धरती माता की बेटे-बेटियाँ*। प्रकृति और मनुष्य के संबंध को पारिवारिकता के मधुर सूत्र में बाँधते हुए देहवाली भीली कवि जितेंद्र वसावा ने इसे पंक्तियों में यूँ सँजोया– *वैसे तो रीतिरस्म-पूजा हर कोई करते हैं / नदी को बहन कहते हैं पहाड़ को भाई / जीवन कहते हैं धान-बरीस को / धरती को माँ और बादल को पिता कहते हैं/ पर आज भी इंसान को इंसान कहते हैं / अनपढ़ों के मेरे गाँव में*। रूबी कवि शिव कुमार पांडेय की कविता ने हाशिए पर जी रहे समाज की दशा के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए। वार जयंतिया भाषा के कवि दैवोर्मि नोङ्पोह ने प्राकृतिक संसाधनों के लुटेरों को अपनी ज़मीन-जंगल और घर से दूर रहने का प्रतीकात्मक प्रतिरोध दर्ज किया। कुई भाषा की रचनाकार अनुजा मोहन प्रधान ने विस्थापित जीवन की त्रासदी का करुण चित्र प्रस्तुत किया -- *सप्ताह भर से / दो वक़्त की मुफ़्त रोटी मिलती है / बंद स्कूल के रिलीफ कैम्प में / सहायता, पुनर्वास और सौहार्द्र के / सरकारी वादे की भरमार के बीच / मेरे अपने घर लौटने का दिन / अभी भी अनिश्चित है*। मोग भाषा की कवयित्री काइरि मोग चौधुरी ने साहित्य के समुद्र में शीर्षक कविता में देशज शब्दों के व्यवहार को वरीयता प्रदान करते हुए धरती के सम्पूर्ण जीवन को रेखांकित किया।

कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश, विशेष कार्याधिकारी ने की।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 की घोषणा

साहित्योत्सव के पहले दिन अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन, आदिवासी भाषा काव्य-पाठ के अतिरिक्त अनुवाद पुरस्कारों की घोषणा की गई। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में आज आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 23 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी ने अनुवाद पुरस्कार 2015 के लिए अनुमोदित किया गया। मराठी भाषा का पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा।

पुरस्कार के रूप में 50,000/- रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्रफलक इन पुस्तकों के अनुवादकों को इसी वर्ष आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएँगे। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार, पुरस्कार वर्ष के तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के पहले के पाँच वर्षों (1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2013 के दौरान प्रथम प्रकाशित अनुवादों को प्रदान किए गए हैं।

इस वर्ष निम्नांकित पुस्तकों को पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गईः

भाषा	अनूदित शीर्षक	अनुवादक	मूल शीर्षक, विधा, भाषा तथा लेखक
असमिया	गणदेवता	सुरेन तालुकदार	गणदेवता (उपन्यास), बाङ्ला, ताराशंकर बंद्योपाध्याय
बाङ्ला	अनामदासेर पुथि	मौ दासगुप्त	अनामदास का पोथा (उपन्यास), हिंदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी
बोडो	जाहारनि मोन्थाइ	धनस्रि सरगियारि	अरण्येर अधिकार (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
डोगरी	किन्ने पाकिस्तान	छत्रपाल	कितने पाकिस्तान (उपन्यास), हिंदी, कमलेश्वर
अंग्रेज़ी	भारतीपुरा	सुशीला पुनीता	भारतीपुरा (उपन्यास), कन्नड, यू.आर. अनंतमूर्ति
गुजराती	जेणे लाहौर नथी जोयुं ए जन्म्यो ज नथी	शरीफा वीजलीवाला	जिस लाहौर नइ वेख्या ओ जम्याइ नइ (नाटक), हिंदी असगर वजाहत
हिंदी	बारोमास	दामोदर खड़से	बारोमास (उपन्यास), मराठी, सदानंद देशमुख
कन्नड	कोचेरेती	एन. दामोदर शेट्टी	कोचेरेती (उपन्यास), मलयाळम्, नारायण
क़मीरी	लल दद्य	रतन लाल शांत	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
कोंकणी	राग दरबारी	जयमाला ना. दनयत	राग दरबारी (उपन्यास), हिंदी, श्रीलाल शुक्ल
मैथिली	बदलि जाइछ घरेटा	देवेन्द्र झा	बाड़ी बदले जाय (उपन्यास), बाङ्ला, रमापद चौधुरी
मलयाळम्	गोरा	के.सी. अजय कुमार	गोरा (उपन्यास) बाङ्ला, रवीन्द्रनाथ ठाकुर
मणिपुरी	लीशीङ अमा शुपना मरिफू मरिगी ममा	नाओरम खगेन्द्र	हजार चौरासीर मा (उपन्यास), बाङ्ला, महाश्वेता देवी
नेपाली	बिराटाकी पद्मिनी	शंकर प्रधान	विराट की पद्मिनी (उपन्यास), हिंदी वृंदावनलाल वर्मा
ओड़िया	काबेरी भली झिअटिए	शकुंतला बलिआर सिंह	ओरु काबेरयाइ पोला (उपन्यास), तमिळ, त्रिपुरसुंदरी लक्ष्मी
पंजाबी	मनोज दास दीआं कहानीआं	बलबीर परवाना	मनोज दासंक गल्प (कहानी), ओड़िया, मनोज दास
राजस्थानी	मदन बावनियो	मदन सैनी	मदन बावनिया (उपन्यास), हिंदी, राजेन्द्र केडिया
संस्कृत	अहमेव राधा अहमेव कृष्णः	ताराशंकर शर्मा 'पाण्डेय'	मैं ही राधा मैं ही कृष्ण (कविता), हिंदी, गुलाब कोठारी
संताली	बापलानीज़	ताला टुडु	परिणीता (उपन्यास), बाङ्ला, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय
सिंधी	लल दद्य	सरिता शर्मा	लल दद्य (उपन्यास), डोगरी, वेद राही
तमिऴ	मीतची	गौरी किरुबननदन	विमुक्त (कहानी), तेलुगु, वोल्गा
तेलुगु	सुफी चेप्पिना कथा	एल.आर. स्वामी	सूफी परंज कथा (उपन्यास), मलयाळम्, के.पी. रामनुन्नी
उर्दू	गीतांजलि	सुहैल अहमद फ़ारूकी	गीतांजलि (कविता), बाङ्ला, रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कर्मा नृत्य की प्रस्तुति

साहित्योत्सव के अन्तर्गत आज पद्मपुर संगीत समिति, बोरासंबर, ओड़िशा के कलाकारों ने बिंझल जनजाति के पारंपरिक नृत्य 'कर्मा' की प्रस्तुति की। कर्मा उपज एवं प्रजनन से जुड़ा एक आदिम पंथ-नृत्य है। यह नृत्य प्रस्तुति कर्मा पूजा से जुड़े रीति-रिवाजों पर आधारित है।

साहित्योत्सव 2016 कार्यक्रम

17 फ़रवरी 2016 (बुधवार)

लेखक सम्मिलन : पुरस्कृत लेखक अपना अनुभव साझा करेंगे, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

युवा साहिती : युवा लेखक उत्सव, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

संवत्सर व्याख्यान : चंद्रशेखर धर्माधिकारी, प्रख्यात विधिवेत्ता एवं गाँधी विचारक द्वारा सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

18 फ़रवरी 2016 (बृहस्पतिवार)

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों की प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' का उद्घाटन विख्यात विदुषी कपिला वात्स्यायन, विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार द्वारा द्वारा, पूर्वाह्न 11.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

19 फ़रवरी 2016 (शुक्रवार)

भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद : पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : *ओथेलो* की 'कथकली' शैली में प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

20 फ़रवरी 2016 (शनिवार)

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेब-साइट : www.sahitya-akademi.gov.in